P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-IV, ISSUE-II, November-2015
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

विदर्भ में बौद्ध धर्म से संबन्धित गुफाएं

नलिनी खे. टेंभेकर
सहयोगी प्राध्यापिका,
इतिहास विभाग,
शासकीय विदर्भ ज्ञान विज्ञान संस्था,
अमरावती

सारांश

बौद्ध धर्म के उत्कर्ष के काल में विदर्भ म बौद्ध धर्म से संबन्धित अनेक गुफाओं का निर्माण पहाडियों को खोदकर किया गया। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से लेकर 6–7 वी शताब्दी तक इन गुफाओं का निर्माण होता रहा। इनमें से कुछ हीनयान पंथ और कुछ महायान पंथ से संबन्धित है। इनमें चांडाला गुफा सबसे प्राचीन मानी जाती है। भद्रावती को विजासन गुफा अपनी भव्यता और शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध है। पातूर की गुफा एक संरक्षित स्मारक है। लेकिन अन्य गुफाए आकार में छोटी और शिल्पविहीन होने के कारण दुर्लक्षित है। इस प्रदेश में स्थित गुफाओ की संख्या प्राचीन काल में विदर्भ प्रदेश में बौद्ध धर्म की लोकप्रियता और स्थिरता को दर्शाती है। बौद्ध धर्म के पतन के पश्चात आज इनमे से अधिकतर गुफाए पांडव गुफा के नाम से पहचानी जाती है और कुछ थोड़े परिवर्तन के पश्चात अन्य संप्रदाय के तोर्थ क्षेत्रों के रूप में जानी जाती है।

मुख्य शब्दः गुफा, स्तूप, चैत्य, विहार, हीनयान, महायान, विजासन, वज्रपानी, पद्मपानी, अर्धमंडप।

पस्तावना

पाचवी शताब्दी के उत्तरार्ध में तथागत गौतम बुद्ध के जीवन के उत्तरार्ध में ही विदर्भ प्रदेश में बौद्ध धम का प्रचार होने लगा था। मौर्यपूर्व काल मे ही विदर्भ के पवनी नामक स्थल पर एक बौद्ध महास्तूप का निर्माण किया गया था। विदर्भ के नागभिड, पवनी, अडम, मनसर, भोण, पातूर, सालबर्डी आदि स्थल बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध केंद्र थे। इस प्रदेश में व्यापारी, श्रेष्ठी और दानकर्ताओं द्वारा अनेक छोंटी–बडो गुफाओ का निर्माण बौद्ध भिक्षूओं के निवास हेतु किया गया। शिल्पकला और प्राचोनता की दृष्टी से इन गफाओं का महत्व है। बौद्ध धर्म के प्रचार में भी उनकी महत्वपूर्ण भमिका रही है।

शोध कार्य के उद्देश्य

1. प्राचीन विदर्भ मे बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार की जानकारी प्राप्त करना।
2. विदर्भ मे निर्मित कृत्रिम गुफाओं का अध्ययन करना।
3. विदर्भ मे बौद्ध धर्म से संबन्धित गुफाओं का अध्ययन करना।
4. पर्यटन की दृष्टी से गुफाओं का महत्व बताना।
5. ऐतिहासिक धरोहर क रूप म गुफाओं का जतन करना।
6. कृत्रिम गुफा निर्माण की प्राथमिक अवस्था को दर्शाना।

विदर्भ की बौद्ध धर्म से सम्बन्धित गुफाएं निम्नलिखित है।

सालबर्डी की बौद्ध गुफा

अमरावती जिले के मोर्शी तहसिल के उत्तर–पूर्व में करीब 12 कि.मी. की दूरी पर सतपूडा पवत की अंतिम पर्वत माला में मांडू एव गंगा नदी के किनारे आठ सुंदर गुफाए है। उनमें से छह बौद्ध धर्म से संबन्धित है। उनमें दो पूरी तरह से निर्मित, एक अधुरी और तीन कुछ नया बांधकाम कर मंदिर में परिवतित की गई है।

दो पूरी तरह से निर्मित गुफाओ में से एक आजकल पंचावतार नाम से जानी जाती है। क्योंकि अब यह गुफा महानुभाव पंथ (चक्रधर स्वामी) के अनुयायियों के नियंत्रण में है। उन्होने गुफा के मूल स्थापत्य में कुछ फेरफार कर गुफा के गर्भगृह को बंद कर सामने श्रीकृष्ण की प्रतिमा की स्थापना की है। फिर भी गुफा के मूल रूप को पहचाना जा सकता हैं। इसमें बऱ्हान्डा (अर्धमंडप) मंडपद्वार उसके पूर्व एवं पश्चिम में स्थित कक्ष, गर्भगृहद्वार, गर्भगृह, स्तंभ एवं छत शामिल है। बऱ्हांडा दो स्तंभ एवं दो अर्धस्तंभों पर आधारीत आयाताकार है। बऱ्हान्डे के पूर्व व पश्चिम में स्थित कक्षों का क्षेत्रफल 3.50 सेमी. x 3.50 सेमी. है। अंदर विस्तृत एवं आयाताकृती सभामंडप है। उसकी ऊचाई ढाई मोटर हैं सभामंडप के उत्तर दिशा की दोवार में दक्षिणाभिमुख

गर्भगृह है। लेकीन आज वह दृश्य रूप में नहीं है। क्योकि उसके सामने आज श्रीकृष्ण प्रतिमा है। पोछे के पर्दे को हटाने के पश्चात टॉर्च के रोशनी में आयाताकार किंतु छोटे गर्भगृह में प्रवेश किया जा सकता है। यहाँ दोवार में उकेरी गयी बुद्ध, पद्मपानी, एवं वज्रपाणी की प्रतिमाएँ है। प्रारंभ में यह गुफाए हीनयान पंथ के अनुयायियों के द्वारा बनाई गयी। बाद में गर्भगृह एवं प्रतिमा निर्माण कार्य महायानियों द्वारा किया गया होगा ऐसा प्रतित होता है।[1]

ऊपर वर्णित गुफा के पश्चिम दिशा में आधे किलोमीटर की दूरी पर लंकेश्वर नामक भव्य गफा है। गुफा के सामने 50X50 फीट का बडा आँगन है। वह भी पलस्तर को छोल कर बनाया गया है। फिर शिल्पकारों ने 35X20 फिट का बऱ्हांडा बनाया और 12X12 फिट पर दो स्तंभो का निर्माण किया जिनकी ऊचाई 12 फिट है। बऱ्हाडें के दोनो बाजू मे दो लघु कक्षाओं का निर्माण किया गया। जिनका क्षेत्रफल 10'X10'X10' फीट है। इन कक्षों में प्रवेश करने के लिये छोटे प्रवेश द्वार है। बऱ्हाडे के बीचोबोच प्रत्यक्ष विहार में प्रवेश करने के लिए प्रवेशद्वार है। प्रवेशद्वार से अंदर प्रवेश करते ही भव्य विहार दिखाई देता है। उसका क्षेत्रफल 40X40 फीट (1600 वर्ग फिट) होकर बीच में चबुतरा (पदाती) और उसके चारो ओर चार स्तंभ है। इस विहार के तीनों दिशाओं में तीन उपकक्ष है। उनका क्षेत्रफल अनुक्रम में 150', 100', 160' वर्ग फीट है। बीच का कक्ष अपूर्ण है। संभवतः वहा पर कोई प्रतिमा स्थापित रही होगी। इस गुफा विहार के मुख्य प्रवेशद्वार की अन्दर की पट्टी पर शिलाक्षरों की दो पंक्तियाँ अंकित है। यह ब्राम्ही लिपी के अक्षर प्रतीत होते है। इस आधार पर इस गुफा विहार का निर्माण काल सातवाहन कालीन रहा होगा। इसके साथ ही गुफा का अजंता की ग्यारहवे नंबर की गुफा से साधर्म्य समानता बताने का भी प्रयास किया गया है।[2]

तोसरी गफा लंकेश्वर विहार के पश्चिम में 15 कि.मी. दरी पर अपूर्ण अवस्था में है। इस गफा विहार में अर्धमंडप, स्तंभ एवं छत का निर्माण किया गया है। इसके पश्चात गुफा का पत्थर कमजोर होने की वजह से था। किन्ही राजनोतिक या आर्थिक कारणों की वजह से इसका निर्माण रोक दिया गया होगा।

पंचावतार गुफा के पूर्व में सात मोटर अंतर पर गुफा विहार क्र. 4 है। पहाड के सामने निकले हुएँ भाग को छिलकर इसका निर्माण किया गया। इस विहार के एकमेव कक्ष के पश्चिम में सोने का चबुतरा है। यह विहार दक्षिणाभिमुख होकर इसके आगे को और बाद में ईट–पत्थरों की दोवार बीच में दरवाजा और दोना ओर खिडकियाँ बनाई गयी।

पंचावतार गुफा के उत्तर–पूर्व में मुक्ताइ मंदिर के आगे गुफा क्र. 5 है। यह मुक्ताई मंदिर के एकदम सामने होने की वजह से मंदिर के निर्माताओं ने पत्थर के द्वार की चौखट 10–11 वी शताब्दी में बिठाई है। इस गुफा का एकमात्र कक्ष उत्तर–दक्षिण 320 सेमी. और पूर्व–पश्चिम 365 सेमी है। छत समतल और दोवारे चिकनो है। मुक्ताई मंदिर के दक्षिण में नदी पूर्व किनारे पर राम–लक्ष्मण मंदिर है। इस मंदिर का मूल भाग पर्वत को काटकर बनाया गया है। आधनिक काल में उसके आगे की और सोमेंट काक्रीट द्वारा मंदिर निर्मित की गयी है। मुल रूप में यह गुफा पर्वत में उकेरी गयी है। उसके उत्तर की दोवार में पत्थर में पाणपोई (पिने का पानी रखने की जगह) बनाई गई दिखाई देती है। सालबर्डी की यह गुफाए इ.स. की दूसरी शताब्दी में निर्मित विहार स्थापत्य प्रकार की है।

पातूर की गफ़ा जिला–अकोला

अकोला जिले में स्थित पातूर नामक गाँव के उत्तर दिशा में तीन कि.मी. की दूरी पर एक बड पहाड को काटकर यह गफा बनाई गयी है। गुफा करीब 80 फीट लंबी 55 फीट चौडी और 15 से 20 फीट ऊँची है। सबसे प्रथम आँगन है। वह 70 फीट X 40 फीट आकार में बना हुआ है। गुफा की सुरक्षा के लिये सुरक्षा दोवार बनाई हुई दिखाई देती है। उसकी चाडाई दो ढाई फीट है। अंदर दो बड विहार है और उनके बाजू में दोनो और दो बडो गुफाए L के आकार में निर्माण की गयी हैं। विहार में प्रवेश करने की जगह पर दो स्तम्भ और दो कुडय स्तम्भ बनाये गय है। जिससे तीन प्रवेशद्वार दिखाई देते है। दक्षिण दिशा के प्रथम विहार में दो बडे बऱ्हांडे है और उनका क्षेत्रफल अनुक्रम में 30X40 और 20X40 फीट है। उसके आगे गर्भगृह है। उसका क्षेत्रफल 12X12 फीट है। इसमें किसी प्रतिमा या प्रतिक चिन्हों का अभाव हैं। इस विहार के प्रवेशद्वार पर ब्राम्ही लिपी में कुछ अक्षर अंकित है। इस आधार पर यह गुफा सातवाहन कालीन पहली दूसरी शताब्दी में बनी होनी चाहिये। दूसरा विहार भी इसी तरह का होकर गर्भगृह में पहले पद्मासन में बैठी एक प्रतिमा स्थापित थी। जो विकृत की गयी थी। शायद वह भगवान बुद्ध की रही हो, या फिर जैन तोर्थकार की।[3]

दक्षिण दिशा के विहार में चारों स्तम्भ सुस्थिती मे है, जबकी उत्तर दिशा के दुसरे विहार के तीनों स्तंभ गिरने के कारण छत के भार को सहने के लिए ईटों के नये स्तंभ बनाएँ गये है। ब्रिटिश काल से ही यह केंद्रशासन द्वारा संरक्षित स्मारक हैं।

चांडाला गुफा

नागपुर जिले के कुही तहसोल के निकट पुल्लर नामक गाँव के करीब चांडाल नामक जंगल में पहाडो में यहा गुफा स्थित हैं यह पहाडो में जमीन से करीब बीस फीट की उँचाई पर बनाई गयी हैं। लेकिन आज यह ध्वस्त स्थिति में है। इस गुफाँ के मुख पर एक बड़ी पत्थर की शिला पर (3'X4'फीट) एक लेख उपलब्ध हुआ। ब्राम्ही लिपी में निर्मित इस शिलालेख का आशय यह है की, ''वंदलक के अपल नामक पुत्र ने औकिक नामक व्यक्ति द्वारा दिये गये दान की सहायता से इस गुफा का निर्माण किया।'' यह विदर्भ की सबसे पहली प्राचीन लेखयुक्त गुफा है। डॉ. शा.भा. देव इन्होने इस गुफा के निर्माण था। काल इ.स पूर्व दूसरी शताब्दी निश्चित किया है।[4] इस गुफा के करीब पवनी एव अड़म यह दो प्रसिद्ध बौद्ध धार्मिक क्षेत्र होने के कारण यह भिक्षूओं का आश्रय स्थान रही होगी।

सातभोकी गुफा समुह

चांडाला गुफा से 6 कि.मी. की दूरी पर किटाली के जगल में (शेगांव के करीब भिवापुर गोठण गाव मार्ग) यह गफा समूह स्थित है। यह पश्चिमाभिमुख चार गुफाओं का समूह है। सब गुफाओं को सात द्वार होने की वजह से स्थानिक लोग इन्हे 'सातभो की' राक्षसों की गफा इस नाम से जानते ह। यह गफा समूह जमीन से 6–7 मीटर की दूरी पर एक गुम्बदाकार पहाड में पत्थर काटकर बनाया गया है। गफाए दो समूहो में बनाई गयी है। प्रथम गुफा समूह में तीन प्रवेशद्वार है और बीच में एक चौकोर स्तंभ है। बारीश के पानी को अंदर आने से रोकने के लिए प्रवेशद्वार के निकट एक पतली नाली बनाई गयी है। इस गुफा में बैठकर ही प्रवेश किया जा सकता है। दुसरी गफा मे व्यक्ति के खडे रहने लायक जगह बनी हुई है। अंदर से यह गुफा तीन मीटर लंबी है। दूसरी गुफा समूह में दो गफा है। उनमें से दुसरी गुफा की छत पतली होने की वजह से वहाँ छेद हो गया है। इन गुफाओं के ऊपर की और पहाड में और कुछ गुफाए है। उनकी ऊचाई एक मीटर और लंबाई तीन मीटर है। इनमे से कुछ गुफाओं के कक्ष दरवाजे से एक दुसरे से जोडे गये है। यह सब गुफाए अन्य गफाआ को तुलना में अत्यंत सादी, शिल्परहित और छोटी है। बौद्ध भिक्षूओं के निवास स्थान हेतु इनका प्रयोजन रहा होगा।[5]

भुयारी गुफा

भुयारी यह गाँव नागपुर–अमरावती मार्ग पर धामनलिंगा नामक ग्राम के उत्तर–पश्चिम में 4 कि.मी. की दूरी पर है। 1994 में पुरातत्व विभाग द्वारा इसका निरोक्षण किया गया। एक छोटे पहाड में यह गफा जमीन से अंदर करीब दस फीट की गहराई तक खोदी गयी है। गफा में प्रवेश हेतु सोढियाँ बनाई गयी है। अन्दर प्रवेश करते ही मंडप (बऱ्हांडा) और गर्भगृह ऐसे दो भाग दिखाई देते है। बऱ्हांडा 15 फीट ऊँचा है। गुफा के दक्षिणी दोवार पर 'समय रिद्धी दानो' ऐसे अक्षर ब्राम्ही लिपी में उकेरे गये है। गर्भगृह में प्रवेश करने हेतु एक दरवाजा है। अंदर एक चबुतरा है और उसके बीच में खाली जगह है। शायद वहाँ कोई मूर्ती स्थापित रही होगी। यह गुफा हीनयानी होगी। बाद में महायानीयों के नियंत्रण मे रही होगी। तोसरी शताब्दी इसका निर्माण काल रहा होगा।[6]

पिंपरडोल गुफा

नागपुर जिले मे उमरेड तहसोल में पिंपलडोह नामक ग्राम से 1 कि.मी. की दूरी पर यह गुफा समूह स्थित है। इस समूह में पाँच गुफा विहार है और सभी उत्तरमुखी है।

गुफा क्र. 1

यह गुफा जमीन से 1.5 मीटर ऊचाई पर स्थित है। गुफा की छत एवं तल गज पृष्ठाकृती हैं गुफा में प्रवेश हेतु 1 मी. ऊँचा प्रवेशद्वार हैं। गुफा 3.37 मी. लंबी, 2.75 मी. चौडो और 1.35 मी ऊँची है, दोवार और छत चिकने बनाए गये है।

गुफा क्र. 2

इस गुफा में बाई ओर एक कक्ष बनाया गया है। और गुफा क्र. 1 की और जाने का छोटा मार्ग भी बनाया है। गफा गजपृष्ठांकृती होकर 3.70 मी. लंबी, 2.50 मी. चौडो और 1.70 मी ऊची है। बाई ओर का कक्ष 2.75 मी. लंबा है।

गुफा क्र. 3

यह आयताकृती है। इसकी ऊचाई 1.20 मी., लंबाई 1.21 मी., और चौडाई 2.08 मी. है।

गुफा क्र. 4

पत्थर मजबूत नही होने के कारण इस गुफा का निर्माण अधूरा छोडा गया है। तलविन्यास आयाता कृती है। गुफा 2.07 मी. लंबी, 2.60 मी. चौडो और 1.36 मी. ऊँची हैं गफा के बाँयी ओर एक शिलालेख उकेरा गया था जो आज अस्पष्ट है।

गुफा क्र. 5

इस गुफा की छत और तलविन्यास गजपृष्ठांकृती है। गुफा 1.75 मी. लंबी 2.50 मी. चौडो और 1.54 मी ऊँची है। छत और दोवारे चिकनी है। प्रवेशद्वार द्वार शाखायुक्त होकर 1.28 मी ऊँचा और 0.87 मी चौडा है। बारिश का पानी अदर ना आये ऐसी सुविधा की गयी है। बौद्ध भिक्षुओं के निवास हेत इस गुफाओं का निर्माण किया गया होगा। निर्माणकाल इ.स. दूसरी तोसरी शताब्दी रहा होगा।[7]

पवनी कोरंभी गुफाएं

भंडारा जिले के पवनी नामक गाँव से उत्तर दिशा में 7–8 कि.मी. पर कोरंभी नामक ग्राम की दक्षिण दिशा में 2 कि.मी की दूरी पर महादेव की पहाडो में दो समूह में गफाएं है। पहले समूह को महादेव मंदिर या महादेव समूह कहा जाता है। इस विहार का अग्रभाग गिरने से छत नष्ट हो गई है। आधुनिक काल में सोढियाँ और अर्धकमानी द्वार बनाएँ गये है। 8X12 फीट आकार के इस आधे खुले बऱ्हांडे से सट कर ही अंदर प्रवेश हेतु चार फीट ऊचा प्रवेशद्वार है। प्रवेशद्वार से अंदर जाते ही 6½X12′ आकार का दूसरा कक्ष दिखाई देता हैं इसी से सटकर एक अर्धगोलाकार गर्भगृह है। इसका आकार 13′X10′ फीट है। यहाँ सोधा खड नही रह सकते ह। बीच में एक ढाई फिट की लंबी सोढो आडो रखी गयी है। आधुनिक काल में इस पर अलग–अलग देवताओं की प्रतिमा रखी गयी है।

महादेव विहार के बाँई ओर दो कि.मी. की दूरी पर और दो गुफाए है। उन्हे गिरीजा–पार्वती विहार या भूयार कहा जाता है। दाँई ओर की गुफा 15′X10′X7′ फीट आकार की है और प्रवेशद्वार दो फीट चौडा और दो फीट ऊचा है। दरवाजे से 7 फीट की दूरी पर एक चौकोर स्तंभ है। यह एक लंबा चौकोर कक्ष है।

बाँई और की गुफा सबसे बड़ी और अंदर से टी (T) अक्षर के आकार की है। गुफाओं का प्रवेशद्वार तीन फीट का है। प्रवेशद्वार से 14 फीट की दूरी पर एक 6 फीट ऊँचा चौकोर खंभा हैं। प्रवेशद्वार से खंभ तक का कक्ष 14′X14′ फिट आकार में है। खंभे के पोछे एक कक्ष है। उसका आकार 8′X13′ फीट है। कोरंभी की यह गुफाए हीनयान पंथ से संबन्धित रही होगी।

विजासन गुफा, भद्रावती

यह विदर्भ में सबसे अप्रतिम और सौंदर्यपूर्ण बौद्ध गुफा है। भद्रावती से 3 कि.मी. की दूरी पर विजासन नामक पहाडो में इसे बनाया गया हैं प्रसिद्ध पुराविद कनिंगहॅम ने अपने सर्वेक्षण अहवाल में इसका विवरण दिया है।[8] पहाडो के मध्य में हलके लाल वालूका पाषाण में पूर्वमुखी इस गुफा के अंदर उत्तर, पश्चिम और दक्षिण दिशा में तीन गुफाए बनाई गयी है और तीनों गुफाओं में एक समान तीन विशाल बुद्ध प्रतिमाएँ बनाई गयी है।

दाँई गुफा

उत्तर दिशा की यह गुफा 14.32 मी. लंबी और 2.43 ऊँची है। मडप, अंतराल और गर्भगृह ऐसी रचना है। मंडप के बाई ओर एक अपूर्ण भिक्षू गृह दिखाई देता है। गुफा के प्रवेशद्वार से गर्भगृह तक छत और दोवार के जोड पर तीन समानांतर रेखाएँ बनाई गयी है। गर्भगृह में 158 सेमी. ऊँची बुद्ध प्रतिमा पद्मासन में ध्यानमुद्रा में विराजमान है।

मध्यवर्ती गुफा

मंडप अंतराल और गर्भगृह ऐसी गुफा की रचना हैं। प्रवेशद्वार से अंदर जाते ही एक कमरा है। उसके आगे एक और कमरा है। इस कमरे के दोनो और छोटे कक्ष हैं इन कक्षों में 45 सेमी ऊँचा सोने के लिये चबुतरा बनाया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है की वे कक्ष भिक्षूओं के निवास के लिए उपयोग में लाए जाते होंगे। गर्भगृह 3. 42X6.42 क्षेत्रफल का है और ऊचाई 1.41 मी. होकर छत सपाट है। गर्भगृह में ऊचे आसन पर विराजमान भगवान बुद्ध की पत्थर की प्रतिमा है।

बाँई गुफा

विजासन बौद्ध गुफा समूह में सबसे छोटी गुफा होकर मंडप, अंतराल और गर्भगृह ऐसी रचना है। प्रवेशद्वार से गर्भगृह तक गुफा की लंबाई 11.4 मी. हैं। मंडप 5.40 मी. लंबा, 2.73 मी. चौडा और 2.83 मी ऊँचा है। मंडप के दाई और आसनयुक्त भिक्षूगृह है। उसके आगे अंतराल है। गुफा में प्रवेशद्वार युक्त तीन चैत्य आकृतियाँ उकेरी गयी है। प्रवेशद्वार से लेकर गर्भगृह तक जमीन से 1.80 मी. ऊँचाई पर तीन रेखाएँ उकेरी गयी है। गर्भगृह 2.03 मी. लंबा, 1.50 मी. चौडा और 1.70 मी. ऊँचा है। उसमें चबुतरे पर 1.50 मी ऊँची पद्मासन एवं ध्यान मुद्रा में बुद्ध प्रतिमा पत्थर में उकेरी गयी है।

गुफा में प्रवेश करने के पूर्व ही दर्शनी भाग में दोनो और करीब दो मीटर ऊचाई पर उत्तर में पाँच और दक्षिण में पाँच ऐसे दस कोष्ठ बने है। उनके उत्तर भाग में दो स्तूप उकेरे गये है। गुफा के दर्शनी भाग के उपर की और भी तीन स्तूप उकेरे गये है।[9]

इसा पूर्व दूसरी–पहली शताब्दी में हीनयान काल में भगवान बुद्ध की पुजा प्रतीक रूप में की जाती थी। जैसे स्तूप, पदकमल, चक्र कमल आदि के अंकन के रूप में। विजासन गुफा में भी प्रतीक रूप में स्तूपों का अंकन जगह–जगह दिखाई देता है। इस पर से यह अनुमान किया जा सकता है की प्रथम यह गुफा हिनयान पंथ के भिक्षूओं का आश्रय स्थान थी। तत्पश्चातः महायान पंथ के प्रभाव के काल में गफा को 10–12 फीट अंदर खोदकर बौद्ध प्रतिमा का निर्माण किया गया होगा। गुफा के छत ओर दोवार के जोड पर तीन रेखाएँ अंकित है लेकीन गर्भगृह में वे दिखाई नही देती है। शायद गुफा का विस्तार करते समय उन रेखाओं को गर्भगृह में अंकित करने शिल्पी भूल गए होगे।[10]

विजय सातकर्णी नामक सातवाहन राजा ने इन गुफाआ का निर्माण किया एसा मत चंद्रपुर के इतिहास के लेखक श्री. राजूरकर ने प्रकट किया हैं।[11] लेकिन वह सही प्रतीत नही होता। पहले से स्थित गुफा में कुछ फेर बदल कर विजय सातकर्णी ने यह गुफा भिक्षूसंघ को दान की होगी।

देऊरवाडा गुफा

भद्रावती के पश्चिम में देऊरवाडा नामक गाँव 11 कि.मी. के अंतर पर है। गाँव के उत्तर–दक्षिण में एक ऊँची पहाडी है। वहाँ पाच–छह निम्न दर्जे की गुफाए है। ये गुफाए शिल्पविहीन है। गुफा क्र. 1 में दो कक्ष है और बीच में एक स्तंभ है। गर्भगृह में नागशिल्प है और दाएँ बाजू की दोवार में एक चौकोर कोष्ठक है। गुफा क्र. 2 मे भी दो कक्ष है। गर्भगृह में कोई शिल्प नहीं है। लेकीन दर्शनी कक्ष में शंख लिपी में एक लेख है। गुफा क्र. 3 मे एक ही कक्ष है। दाँई और की दोवार पर शंख लिपी में एक लेख है। गुफा क्र. 4 और गुफा क्र. 5 भी एक एक कक्ष के है। लेकिन गुफा क्र. 5 के प्रवेशद्वार पर पंचारती लिए एक स्त्री की छोटी प्रतिमा है। गुफा क्र. 6 सबसे बडो है। इसका ज्यादातर भाग नैसर्गिक रूप से बना है। इसे नरसिंह गुफा के नाम से जाना जाता है। लेकीन गर्भगृह में कोई प्रतिमा आज नही है। शंखलिपी से यह गुँफाएँ 6–7 वी शताब्दी में निमाण की गयी होगी ऐसा अनुमान किया जा सकता है।[12]

कुनघाडा गुफाएं

चंद्रपुर जिले के नागभीड तहसिल में कुनघाडा नामक ग्राम के करीब यह गुफाए हैं स्थानिक लोग इन्हे पांडव गुफाए भी कहते है। इनमें क्रमांक दो यह गुफा महत्वपूर्ण हैं गुफा में स्थित स्तंभ की वजह से गुफा बन्हाडां और अंर्तकक्ष ऐसे दो भागो में विभाजित हुई है। पहले कक्ष के पश्चिमी दोवार पर ब्राम्ही लिपि में 13 अक्षर उकेरे गये है। यह कक्ष 1.74X2.70 मी क्षेत्रफल का हैं। दुसरा कक्ष 2मी X3.10 मी होकर ऊचाई 1.50 मी. है। गुफा क्र. 1,3, और 5, 2X3.10 मी आकार में होकर सादी और शिल्पविहीन है। गुफा क्रमांक चार, गुफा क्र. 2 के आकार की है। शिलालेख का वाचन ''शिव स्वामी पुतस ग्रामे पमई'' ऐसा किया गया है।[13] इसका अर्थ शिवस्वामी नामक व्यक्ति के पुत्र ने जो प्रमई गाँव का निवासी है, अपने पिता की स्मृति प्रित्यर्थ या पुण्य संपादन कारणां हेतु इस गुफा समूह का निर्माण किया और भिक्षूसंघ को अर्पण किया।

माना पहाडो की गुफाएं, चंद्रपुर

चंद्रपूर शहर में बने परकोट के पठाणपूरा दरवाजे के दक्षिण में 1 कि.मी. की दूरी पर झरपट नदी के किनारे माना नाम से प्रसिद्ध पहाडो में एक गुफा समूह है। पहले यहाँ पाँच गुफाए थी। आज केवल चार है और वालूका पाषाण पत्थर में बेहद सादे तरीके से बनाई गयी

है। क्रमांक 1 के गुफा में प्रवेशद्वार पर दोनो बाजू में एक–एक कमल और देव कोष्ठक बनाएँ गये है। दूसरे क्रमांक की गुफा के प्रवेशद्वार पर केवल कमल बनाएँ गये ह बाकी गफाए अलंकार विहीन है।[14] क्रमांक 1 की गुफा 2.50x2.50 मी. आकार की थी और 2 मीटर ऊँची है। इस गुफा के चारो कोने में भित्ती अर्धस्तंभ बनाएँ गये हैं यह इस गुफा की विशेषता है। दूसरी तीन गुफाए भी 2.50x2. 50 मी. आकार की है। यह गुफाए बौद्ध भिक्षओं के निवास हेतु दूसरी–तोसरी शताब्दी में बनाई गयी होगी।[15]

निष्कर्ष

सम्राट अशोक के धर्म महामात्रों ने विदर्भ प्रदेश में बड पैमाने पर धर्मप्रचार किया होगा। विदर्भ में पवनी नामक जगह पर अशोक पूर्व काल के महास्तूप के अवशेष प्राप्त हुए है। शुंग काल में उसे और विस्तृत किया गया था। सातवाहन काल में भी विदर्भ में बौद्ध धर्म का प्रचार बड पैमाने पर था। इसी काल में पूरे विदर्भ में अनक पर्वतमालाओं में बौद्ध भिक्षूओं के लिए चैत्य और विहार निर्माण किये गये। इन बौद्ध गुफाओं को दो भागो में विभाजीत किया जा सकता है।

स्तूप या चैत्यमंदिर

यह बौद्ध भिक्षूओं की पूजा अर्चना के लिये बनाये गये थे।

विहार

यह वर्षावास के दौरान बौद्ध भिक्षूओं के निवास हेतू बनाए गये थे।

भद्रावती, सालबर्डी, पातूर इन गुफाँओं का समावेश स्तुप या चैत्य मंदिर प्रकार में किया जा सकता है, और दूसरी आकार में छोटी शिल्पविहीन गफाओ का समावेश विहार प्रकार में होता है। इ.स. पूर्व दूसरी शताब्दी से 6–7 वी शताब्दी तक विदर्भ में बौद्ध धर्म से संबन्धित गुफाओ का निर्माण हुआ। इ.स. पूर्व दूसरी शताब्दी से इस्वो सन की दूसरी शताब्दी तक याने सातवाहन काल तक निर्माण की गई गुफाए हीनयान पंथ से संबन्धित थी। महायान पंथ के प्रभाव के काल में इनमे से कुछ गुफाओं में बुद्ध प्रतिमा की स्थापना की गयी। महायान पंथ से संबन्धित कुछ गुफाओं को निर्माण 6–7 वी शताब्दी तक होता रहा।

विजासन और पातूर की गुफाओं को छोडकर दूसरी गुफाए भव्यता की दृष्टी से पश्चिम महाराष्ट्र की गुफाओं की तुलना में निकृष्ठ दर्जे की है। लेकीन इनके अध्ययन से प्राचीन विदर्भ में बौद्ध धर्म की भव्यता की कल्पना का जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मेश्राम प्रदोप, विदर्भ में बुद्ध धम का इतिहास– श्री. मंगेश प्रकाशन, नागपुर – 2007 पृष्ठ – 81
2. चितले श्रीपाद, विदर्भ में प्रस्तर गुफाए– प्रभुकृपा प्रकाशन, महल, नागपुर – 2002, पृष्ठ क्र. 64–65
3. अकोला जिल्हा गॅझेटियर, महाराष्ट्र राज्य, मुंबई, 1977 पृष्ठ क्र. 53
4. देव शा.भा. विदर्भ सशोधन मंडल, वार्षिकांक, नागपुर 1971, पृष्ठ 108–111
5. मेश्राम प्रदोप, विदर्भ में बुद्ध धम का इतिहास– श्री. मंगेश प्रकाशन, नागपुर – 2007 पृष्ठ – 62
6. चितले श्रीपाद, विदर्भ में प्रस्तर गुफाए– प्रभुकृपा प्रकाशन, महल, नागपुर – 2002, पृष्ठ क्र. 52
7. मेश्राम प्रदोप, विदर्भ में बुद्ध धम का इतिहास– श्री. मंगेश प्रकाशन, नागपर – 2007 पृष्ठ – 65
8. कनिंगहँम, ए, आर्किऑलॉजिकल सर्व ऑफ इंडिया, रिपोर्ट, खंड – 9, 1879, पृष्ठ–221
9. बोरकर र.रा. चंद्रपुर –गडचिरोली जिले का पुरातत्व, सुयश प्रकाशन, नागपुर, 2009, पृष्ठ क्र. 161
10. बोरकर र.रा. चंद्रपूर –गडचिरोली जिले का पुरातत्व, सुयश प्रकाशन, नागपुर, 2009, पृष्ठ क्र. 162 और चितले श्रीपाद, विदर्भातिल प्राचीन मंदिर, श्री. मंगेश प्रकाशन, नागपुर – 2013, पृष्ठ क्र. 55
11. राजूरकर अ.ज. चंद्रपुर का इतिहास, हरिवंश प्रकाशन, 2005 पृष्ठ क्र. 37
12. चितले श्रीपाद, विदर्भ में प्रस्तर गुफाए– प्रभुकृपा प्रकाशन, महल, नागपुर – 2002, पृष्ठ क्र. 109
13. बोरकर र.रा. चंद्रपूर –गडचिरोली जिले का पुरातत्व, सुयश प्रकाशन, नागपुर, 2009, पृष्ठ क्र. 164
14. बोरकर र.रा. चंद्रपुर –गडचिरोली जिले का पुरातत्व, सुयश प्रकाशन, नागपुर, 2009, पृष्ठ क्र. 177
15. टेंभेकर एन. के., पूर्व विदर्भ मे ऐतिहासिक एव प्रेक्षणीय स्थल, पिंपला पूरे प्रकाशन, नागपुर, 2010, पृष्ठ क्र. 96